एक समर्पित पत्राकार तथा जागरूक नागरिक

धीरेन्द्र नाथ चतुर्वेदी

मेजर जनरल नीलेन्द्र कुमार

ई0 114, सेक्टर 21, जलवायु विहार

नोएडा 201301

लखनऊ के लोकमनगंज इलाके में जाति वान्धवों के लिये 80 लोकमनगंज एक प्रमुख लेन्ड मार्क है। चालीस के दशक से अगले सत्तर वर्ष से अधिक समय तक लखनऊ आने वाले – विशेषकर ग्राम पिनाहट, फिरोजावाद तथा जयपुर आदि स्थानों से – महानुभावों के लिये यहां आना और आतिथ्य ग्रहण करना एक परम्परा सा बन गया था। यह मकान पिनाहट के पं0 जयकृष्ण दास तथा उनकी पत्नी श्रीमती गंगा देवी का निवास स्थान था। उनकी मेहमान नवाजी तथा जाति प्रेम सर्वविदित था। उनसे हमारे परिवार के बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध थे। जयकृष्ण दास जी के दोनों पुत्रा – महेन्द्र (घर का नाम मुन्ना या एम0एन0) एवं धीरेन्द्र – में अपने मां व पिता के सब गुण – आतिथ्य सत्कार एवं सहृदयता विरासत में मिले थे।

इस मिलन सारिता और भाभी के नाम से विख्यात उनकी मां की खातिरदारी के संदर्भ में अस्सी नम्बर के सामने सुबह–शाम उस समय दस–बारह से बीस–बाईस की आयु वाले कई लड़कों का जमघट रहता था। यह उल्लेखनीय है कि शरद, लल्ला, पूची, उस्ताद, विश्वनाथ, उपेन्द्र, डी0एन0, भूपेन्द्र, प्रकाश, बच्चू, सुशील, आर0एन0, कुशल तथा अन्य कुछ और। इनमें से अधिकतर प्रायः किसी भी अवसर पर ठन्डाई के लिये तैयार करने या होली, दिवाली मनाने के लिये भी कटिबद्ध रहते थे। इन सबके बाद हम अशोक, मनोज तथा दिलीप (घन्नू) छोटों की फेहरिस्त में थे।

क्रिकेट की एक–दो टीमें तैयार करने के लिए कुछ विजातीय इस उम्र में शामिल कर लिये जाते थे। उस समय तक बाल संग्रहालय एवं रवीन्द्रालय नहीं बने थे। बिहारी भवन के दूसरी ओर खाली मैदान में क्रिकेट के मैच आयोजित होते थे।

इस फेहरिस्त में एक प्रमुख नाम था धीरेन्द्र जी का। धीरेन्द्र जी (घर का नाम मिम्मी) स्वभाव से सीधे, सरल, खुले दिल प्रवृत्ति के थे। संगीत के प्रेमी थे। लखनऊ विश्वविद्यालय से राजनीति शास्त्रा में एम0ए0 करने के बाद उनके सामने अगला प्रश्न उठा अब क्या? एम0एन0 भाई0 साहब के कहने पर दद्दा (निर्मल चन्द्र जी) ने विधान परिषद् में अपने सहयोगी एन0एस0 घोष से सिफारिश की। घोष साहब पायनियर के सम्पादक थे तथा प्रदेश के सबसे सम्मानित पत्राकारों के मुखिया। तरकीब काम कर गयी। धीरेन्द्र जी को पत्राकारिता जगत में प्रवेश मिल गया।

पायनियर से अखबार नवीसी शुरु करने में घीरेन्द्र जी को न केवल जरनलिज्म के गुर सीखने का मौका मिला वरन् एक पुख्ता नींव के आधार पर विकसित हो सकने का अवसर भी।

अठाइस नवम्बर उन्नीस सौ चौंसठ को हमारी मीरा मौसी से विवाह के बाद वह मिम्मी भाई साहब से हमारे मौसा जी बन गए। कुछ समय बाद जीवन के एक निर्णायक मोड़ पर उन्होंने चन्डीगढ़ से प्रकाशित ट्रिब्यून समाचारपत्रा में शिफ्ट करने का फैसला किया। यह एक महत्वपूर्ण तथा फायदेमन्द कदम था।

ट्रिब्यून में धीरेन्द्र जी को पहले चन्डीगढ़ में डेस्क पर काम सौंपा गया। लखनऊ में पायनियर की ट्रेनिंग से उन्हें अपनी कार्य कुशलता दिखाने में देर न लगी। भाषा की जानकारी, नियोजित कापी लिख सकने की पटुता तथा दिल को छू लेने वाले शब्दों के चयन कर सकने की खूबी के कारण शीघ्र ही उन्हें रिपोर्टिंग के लिये उपयुक्त समझा गया। प्रारम्भिक प्रशिक्षण के बाद वे अम्वाला में रिर्पोटिंग में आ गए। बतौर रिर्पोटर बाद के वर्षों में उन्हें जम्मू तथा जलंधर में तैनात किया गया। जम्मू में तीन वर्ष तथा जलंधर में अठारह वर्ष के कार्यकाल के दौरान् वह उन दोनों स्थान पर पत्राकारों के मुखिया रूप में प्रसिद्ध थे।

ट्रिब्यून के प्रभाव क्षेत्रा की दृष्टि से जम्मू तथा जलंधर काफी महत्वपूर्ण केन्द्र थे। सत्तर तथा अस्सी के दशक में पंजाब तथा हरियाणा देश के प्रगतिशील राज्यों की सूची में तेजी से ऊपर आ रहे थे। एक ओर कृषि उत्पादन में वृद्धि तथा दूसरी तरफ औद्योगिक विकास के लिये दौड़। धीरेन्द्र जी ने पंजाब, हिमाचल तथा जम्मू क्षेत्रा के राजनीतिक और सामाजिक उतार चढ़ाव का अपनी रिपोर्ट में सीधा तथा सकारात्मक खाका खींचा। दहेज की कुप्रथा पर लिखा। तस्करी पर प्रकाश डाला। उस अवधि की प्रमुख सरगर्मियां – आतंकवाद का प्रखर रूप, आया राम गया राम की दलबदलू कलाबाजियां, धीरेन्द्र ब्रह्मचारी की प्रशासन पर पकड़, दरवारा सिंह, जैल सिंह तथा वैंत सिंह का उभरना तथा सत्ता के लिये धर पकड़ – इन सब पर उनकी खबरें पाठक पसंद करते थे। इन इलाकों में कांग्रेस, अकालीदल तथा भाजपा के बीच रस्सा कस्सी पर वह ईमानदारी तथा निष्पक्षता से लिखते थे। अपराध, सामाजिक जनजीवन, युवा वर्ग की उम्मीदें तथा शिक्षा पर उनकी नजर सतत बनी रहती थी। आतंकवाद से ग्रसित पंजाब में दहशत के दौरान् भी वह निडर अपनी रिपोर्ट भेजते रहे। हथियार बन्द उग्रवादी भी उनकी निष्पक्षता के कारण उनका आदर करते थे। खेल जगत, संगीत तथा फिल्मों पर भी वह प्रायः लिखते थे। दूरदर्शन पर विशेषज्ञ के रूप में बुलाए जाते थे।

धीरेन्द्र जी की शैली सरल शब्दों के प्रयोग से प्रत्यक्ष तथा सीधा असर करने वाली थी। उनकी रिपोर्ट संतुलित व निष्पक्ष होती थी। अपनी बात कहने से वह पीछे हटने वालों में नहीं थे। खबर विना लाग लगाव के वह ईमानदारी से लिखते थे। इन्टरव्यू कवर करते समय वह सामने वाली हस्ती से सरल भाव में निकटता हासिल करने में कामयाब होते थे। ट्रिब्यून के सम्पादक माधवन नायर तथा प्रेम भाटिया के वह विश्वासपात्रा पत्राकारों की फेहरिस्त में प्रमुख थे।

संवाददाता के रूप में धीरेन्द्र जी को जलंधर के बाद फरीदाबाद की जिम्मेदारी दी गयी। हरियाणा के राजनीतिक मंच पर देवीलाल, भजन लाल, वंशी लाल तथा अन्य चोटी के नेताओं की भूमिका को उन्होंने बारीकी से आंका। फरीदाबाद के जनजीवन की समस्याएं, राजधानी दिल्ली का इस सेटेलाइट टाउन पर प्रभाव तथा औद्योगीकरण की भूमिका पर उन्होंने अपने कलम से अहम मसले उठाये। मध्य वर्ग तथा मज़दूरों की मुसीबतों को जगजाहिर किया। पानी, बिजली तथा ट्रेफिक की समस्याओं पर रोशनी डाली। शीघ्र ही वह नगर प्रशासन के लिये अपनी खरी तथा सीधी खबरों के लिये सम्मान की नजरों से देखे जाने लगे।

ट्रिब्यून से औपचारिक रूप में अवकाश ग्रहण करने के बाद भी उन्होंने कई पत्राों के लिये नियमित रूप से अपने कालम लिखे। टाइम्स आफ इंडिया के लिये लिखा। पंजाब केसरी ने उन्हें ब्यूरो चीफ के ओहदे पर काम करने के लिए नियत किया।

वरिष्ठ नागरिकों तथा जागरूक निवासी के रूप में फरीदाबाद ही नहीं, देश विदेश के मसलों पर वह अपनी नजर रखते थे। अपने एरिया के सीनियर सिटीजन फोरम के वह प्रमुख सदस्यों में थे। कई बार अपने सहयोगियों तथा साथियों की पारिवारिक मसलों की कानूनी मुद्दों पर मेरी राय मांग कर उनकी मदद करने की उन्होंने भरसक कोशिश करी।

शिक्षा से धीरेन्द्र जी को बहुत लगाव था। देश के विकास का मसला हो या व्यक्तिगत तरक्की का प्रश्न। वह इसमें पढ़ाई, प्रशिक्षण तथा स्वाध्याय के महत्व पर जोर देते थे। इन्हीं कारणों से उन्होंने अपनी पत्नी (मेरी मौसी) मीरा जी को पढ़ाने के लिये न केवल प्रोत्साहित किया वरन् रेडियो, टी0वी0 तथा कवि सम्मेलनों या अन्य कल्चरल प्रोग्रामों में सक्रिय भाग लेने के लिए मार्गदर्शन किया। फरीदाबाद में अपने मकान के पास पिछड़े वर्गों के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा देने तथा मुफ्त कापी किताब व स्टेशनरी देने की व्यवस्था के लिए सब साधन जुटाए। मीडिया के माध्यम से इस आवश्यक कार्य की जरुरत को जन साधारण तक पहुंचाया। अपने पुत्रा पंकज, पुत्राी नीतू की पढ़ाई पर पूरा ध्यान किया। पुत्रा वधू मनीशा को भी पढ़ाने के कार्य पर जुटे रहने को सदैव प्रोत्साहित किया।

पचहत्तर वर्ष की आयु में मंगलवार 26 फरवरी 2013 को धीरेन्द्र जी का फरीदाबाद में निधन स्थानीय समाज के एक वरिष्ठ, सम्मानित तथा प्रतिष्ठित स्तम्भ का खोना था। उनका सरल स्वभाव तथा आत्मीयतापूर्ण व्यवहार उनके सब परिचितों के दिलों में सदैव के लिये घर कर गया है।

टीनू की याद में

मेजर जनरल नीलेन्द्र कुमार

चालीस वर्ष की आयु अधिक नहीं होती। इस उम्र में दुनिया से चले जाने को अल्पायु ही कहा जाएगा। लेकिन उस वर्ष छब्बीस सितम्बर को सेन फ्रांसिस्को अमरीका में विनीता ;पत्नी श्री चेतन चतुर्वेदीद्ध के

निधन के बावजूद उसके परिवार सम्बन्धियों और मित्रों की लम्बी फेहरिस्त में उसकी छवि तथा व्यक्तित्व की खुशबू हमेशा ताज़ी रहेगी।

विनीता मेरी छोटी बहन थी। उसकी मॉ सुधा मेरी मॉ की छोटी बहन थी। बचपन से टीनू के नाम से जानने वाली विनीता का प्यारा चेहरा हृदय पर अंकित है। सहज मुस्कान वाली उसकी ऑखों में एक अजीब सी चमक और खुशी थी जो किसी को भी अपनी ओर स्वाभाविक रूप से खींच ले। वह आकर्षण जो कोई भुला न सके।

नौ अप्रैल 1964 को जन्मी विनीता ने रुड़की विश्वविद्यालय में कार्यरत अपने पिता डॉ0 रविशंकर के साथ रहकर प्रारंभिक शिक्षा के दौरान् ही अपनी कुशाग्र बुद्धि से सबको प्रभावित कर लिया था। बाद में लखनऊ शिफ्ट हो जाने के बाद वह अपनी पढ़ाई में सदैव अव्वल दर्जे की हकदार रही। जियोलोजी में एम0एस0सी0 करना उसकी शैक्षिक योग्यता का प्रमाण था।

महासभा के भूतपूर्व सभापति वैध सुरेश जी के पुत्रा चेतन से परिणय के बाद टीनू का वैवाहिक जीवन बम्बई तथा फिर अमरीका में बीता। जिन्दगी में किसी भी काम को उसने विनीता ने सरलता और कामयाबी से किया। चाहे वह लखनऊ के सिटी मान्टेसरी स्कूल में पढ़ाना हो या विवाह के बाद बम्बई में कंप्यूटर की ट्रेनिंग देना और या फिर अमरीका में रहते हुए समीपवर्ती मन्दिरों में समाज सेवा के रूप में शिक्षण कार्य करना।

कैन्सर के असाध्य रोग का विनीता ने पूरे साहस के साथ सामना किया। इस जानलेवा मर्ज के साथ जीते हुए, उनकी जिन्दादिली तथा धैर्य के साथ पारिवारिक मूल्यों के भली भॉति निर्वहन की बेमिसाल खूबी सबने सराही। अपने बच्चों पर अपना पूरा प्यार उड़ेलते हुए टीनू ने उन्हें अपना काम खुद करने व आत्मनिर्भर बनने के लिए तैयार किया। समझाया भी कि जब भगवान किसी को बुलाता है तो कोई मना नहीं कर सकता है।

बीमारी का पता चलने के बाद अपने पति चेतन के साथ बिताए भारत तथा अमरीका में प्रत्येक क्षण में विनीता ने अपने सब परिवार जन तथा सम्बन्धियों से मुलाकात करके उपलब्ध लमहों को खुशी तथा निकटता से बिताया। इन मुलाकातों में वह सदैव खुशी तथा हॅसी मजाक का माहौल कायम रखती थीं। मौत के मंडराते साये को नजर अन्दाज करके वर्तमान को उसने पूरी प्रसन्नता तथा सकारात्मक रूप में जीकर अपनी स्मृति को अमर कर दिया।

शिक्षा के क्षेत्रा में प्रशंसनीय योगदान

मेजर जनरल नीलेन्द्र कुमार
ई0 – 114, सेक्टर 21, जलवायु विहार
नोएडा – 201301

चतुर्वेदी चन्द्रिका के जून 2011 अंक को शिक्षा विशेषांक निकालने के लिए संपादक मंडल सराहना का पात्रा है। समाज के शिक्षा क्षेत्रा में उल्लेखनीय योगदानियों की सूची तथा कार्यरत संस्थाओं का इतिहास एवं उपलब्धियों की चर्चा उनके प्रति सही सराहना है।

इस दृष्टि से उस अंक से अछूते रह जाने वाले कुछ महानुभावों एवं उनके कार्यस्थल का चित्राण वांछनीय है। इस लेख में पिछले सौ वर्ष से अधिक के अंतराल में कुछ उल्लेखनीय गतिविधियों तथा स्वनामधन्य शिक्षकों, शिक्षाविदों और संस्थाओं का वर्णन है।

चतुर्वेदी महासभा की प्रकाशित गतिविधियों के अनुसार 1898 में एक अंग्रेज़ी पाठशाला स्थापित की गई थी। 26–27 दिसंबर 1898 में चतुर्वेदी महासभा के राजा जयकृष्ण दास के सभापतित्व में हुए अधिवेशन में पारित प्रस्तावों में कई कमेटियों के गठन का फैसला किया गया था। इनमें से एक को प्रत्येक शहर व ग्राम में यह मालूम करना था कितने बालक किन कारणों से शिक्षा नहीं पाते। जो लड़के फीस व किताब के कारण नहीं पढ़ पाते उनको सहायता देने का निश्चय किया गया था ताकि चार से चौदह वर्ष तक के समस्त बालक पढ़ें। इस प्रकार यह इंगित होता है कि महासभा के गठन के बाद से शिक्षा की ओर समाज वान्धवों का विशेष ध्यान था।

प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्रियों की श्रंखला में सबसे पहला नाम पं0 गनेशी लाल चतुर्वेदी (विशाल भारत के भूतपूर्व संपादक तथा सांसद पं0 बनारसी दास जी के पिता) का है। वह चन्द्रपुर स्थित अपर प्राइमरी पाठशाला के प्रद्यानाध्यपक थे। पचास वर्ष से अधिक उन्होंने आगरा के डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के अधीन जिले के विभिन्न भागों में काम किया था। सन् 1897 के आस–पास वह चार वर्ष चन्द्रपुर के स्कूल के हेडमास्टर थे। उनके शागिर्द उनकी बहुत इज्ज़त करते थे। उनके अत्यन्त प्रिय शिष्यों में एक मुक्ताप्रसाद (कछपुरा निवासी) थे।

कछपुरा निवासी इंजीनियर श्री मुक्ताप्रसाद जी (1885–1958) पं0 गनेशी लाल जी के प्रिय छात्राों में सर्वोपरि थे। उनकी प्रारंभिक शिक्षा ग्राम चन्द्रपुर तथा फिर आगरा में हुई। 1897 में उन्होंने आगरा कॉलेज से संबंधित कालेजिएट स्कूल में प्रवेश किया। एन्ट्रेन्स की परीक्षा 1903 में पास करके वह रुड़की के सिविल इंजीनियरिंग स्कूल में ट्रेनिंग के लिए गए। बाद में इंजीनियरिंग के क्षेत्रा में वर्मा तथा देश के विभिन्न स्थानों पर कार्य किया। वह एक नामी शिक्षाविद तथा समाजसेवी थे। उनका विश्वास था कि कोई व्यक्ति चाहे कितना ही बड़ा क्यों न हो, बिना शिक्षा प्राप्त किए उन्नति नहीं कर सकता है। विद्यार्थियों तथा शिक्षा संस्थाओं की वह यथाशक्ति सहायता करते थे। उन्होंने लखनऊ में गणेश गंज, लोकमनगंज तथा पानदरीवा में प्रारंभिक व माध्यमिक पाठशालाएं खुलवाईं। ग्राम कछपुरा में जूनियर हाईस्कूल प्रारंभ करवाया। हिन्दू एजुकेशन सोसाइटी के वह संस्थापक सदस्य थे। इस संस्था के तत्वाधान में उन्होंने आलमबाग (लखनऊ) में सिविल इंजीनियरिंग स्कूल की स्थापना करवाई। बाद में इलेक्ट्रिकल तथा मैकेनिकल आदि विधाओं के शुरू होने पर उस स्कूल का नाम लखनऊ पोलीटेकनिक हो गया। इसकी लोकप्रियता के कारण सन् 1954 में उन्हें दूसरी संस्था इंजीनियरिंग वोकेशनल स्कूल

के नाम से खोलनी पड़ी। लखनऊ के गैर सरकारी क्षेत्रा में उनके द्वारा स्थापित टेक्निकल हाईस्कूल प्राविधिक शिक्षा के क्षेत्रा में नए पाठ्यक्रम वाली पहली संस्था थी।

श्रीनिवास जी (चन्द्रपुर) मुक्ताप्रसाद जी के समकालीन थे। वे दोनों आगरा के चौबे बोर्डिंग हाऊस (कोठी मीना बाजार) में हास्टल में रहते थे। मुक्ताप्रसाद जी के शब्दों में,''छोटी उमर में ही श्रीनिवास जी की बुद्धि बड़ी तीव्र थी। हम सब लोगों ने सलाह करके उनका नाम 'श्री दादा' उसी वख्त रख दिया था। दादा बचपन से ही पढ़ने में खूब मन लगाते थे। शायद ही वह कभी क्लास में गैरहाजिर रहे हों। आगरा के बाद भी वे अपनी आगे की पढ़ाई करते रहे। उन्होंने एम0ए0 की परीक्षा पास की और शास्त्राी हो गए। वह विद्याप्रेमी ऊंचे दर्जे के थे। वे चाहते थे कि चतुर्वेदियों में कोई अपढ़ न रहे।'' शिक्षा के प्रसार के लिए उन्होंने अनगिनत काम किए।

मुक्ताप्रसाद जी के ज्येष्ठ पुत्रा निर्मलचन्द्र जी उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध शिक्षा विद् , राजनीतिज्ञ एवं समाजसेवी थे। शिक्षा के संगठन, संचालन एवं विस्तार के क्षेत्रा में उनका अनूठा योगदान समाज के लिए गौरवशील है। आजादी की लड़ाई में उन्होंने कांग्रेस पार्टी के सदस्य के रूप में उल्लेखनीय कार्य किया। गोविन्द वल्लभ पंत, हाफिज मोहम्मद, इब्राहीम, चन्द्र भानु गुप्त, डॉ0 सम्पूर्णानन्द, चौधरी चरण सिंह तथा रफी अहमद किदवई के वह निकटतम सहयोगी थे। 1952–66 तक वह उत्तर प्रदेश विधान परिषद् के सदस्य ग्रेजुएट चुनावक्षेत्रा में चुने गए। प्रसिद्ध शिक्षाविदों में आचार्य नरेन्द्र देव, डॉ0 ईश्वरी प्रसाद, राधा कमल मुखर्जी, बीरबल साहनी तथा डॉ0 वी0एन0 शुक्ला उनके अंतरंग समकालीनों में थे। देश विदेश की शिक्षा प्रणालियों, समस्याओं एवं उपलब्धियों के विषद अध्ययन के बाद उन्होंने उत्तर प्रदेश के बोर्ड ऑफ हाई स्कूल एन्ड इन्टरमीडिएट एजूकेशन, बोर्ड ऑफ इंडियन मेडिसन तथा लखनऊ विश्वविद्यालय की एक्जीक्यूटिव कौंसिल के चार दशक से अधिक कार्यकाल में प्रभावकारी परिवर्तन किए। जे0के0 इंस्टीट्यूट ऑफ सोशलाजी, इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन के वह जनक थे। प्रदेश की यूनिवर्सिटी ग्रांट कमेटी (देश की यू0जी0सी0 के समकक्ष संस्था) के सदस्य के रूप में उनका योगदान उत्तर प्रदेश विधानमंडल द्वारा सराहा गया। लखनऊ में मूक वधिर विद्यालय की स्थापना करके उन्होंने विश्व स्तर की विशेष पढ़ाई को उपलब्ध करके समाज कल्याण की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण मिसाल कायम की। उस विद्यालय से संबंधित टीचर ट्रेनिंग कालेज एशिया में अपनी ढंग की पहली संस्था थी। उसकी उपयोगिता विभिन्न समय पर राज्यपाल होमी मोदी, सरोजनी नायडू, गोविन्द वल्लभ पंत एवं इन्दिरा गांधी आदि हस्तियों ने की।

निर्मल चन्द्र जी लखनऊ के प्रसिद्ध कालेजों नारी शिक्षा निकेतन, नेशनल इन्टर कालेज तथा लखनऊ पोलीटेक्निक के अध्यक्ष चुने गए। लखनऊ विश्विद्यालय के अतिरिक्त रूड़की, गोरखपुर, काशी विद्यापीठ की एक्जीक्यूटिव कौन्सिल की सदस्यता के लिए आमंत्रित किए गए तथा उनके संचालन के लिए उन्होंने बखूबी से योगदान दिया।

शिक्षा के संबंध में निर्मल चन्द्र जी के कुछ कथन उद्धृत हैं। 18 अक्टूबर 1950 को फर्रूखावाद में हुए महासभा के अठारहवें अधिवेशन में उन्होंने कहा था,''आजकल जहां जाति में शिक्षा का प्रचार देखकर

प्रसन्नता होती है, वहीं शिक्षा प्राप्त युवकों के रंग ढंग देखकर चिंता भी उत्पन्न होती है। विद्या का मूल गुण यह है कि वह मनुष्य को विनयी, शिष्ट और मृदु बनाए न कि निरंकुश, उदंड, असभ्य और अश्रद्धालु। यदि उच्च शिक्षा का उन पर यही प्रभाव पड़ता है, तब तो मैं यही कहूंगा कि,''ऐसो सोना त्यागिए जातें फाटें कान।'' त्रिलोकीनाथ महाविद्यालय टांडा, फैजाबाद में दिए गए दीक्षान्त समारोह में उन्होंने कहा था,''आज हमारी शिक्षा पद्धति की सबसे बड़ी कमी यह है कि शिक्षक और छात्रा वर्ग एक दूसरे के प्रति आस्थावान नहीं हैं। दोनों के बीच अविश्वास की गहरी खाई खुदती चली जा रही है या खोद दी गई है। इस खाई को पाटना आज के शिक्षा जगत की सबसे कड़ी समस्या है। आज का विद्यार्थी न तो एकलव्य बन पाता है और न गुरु द्रोणाचार्य। मेरी समझ में इल्मियत की अपेक्षा इन्सानियत ही शिक्षा का मूल उद्देश्य होना चाहिए।

डॉ0 सालिगराम चतुर्वेदी ने लखनऊ, मध्यप्रदेश तथा कोलकाता के कई शिक्षण तथा प्रशिक्षण संस्थाओं में अध्यापन तथा संचालन का कार्य चार दशक से अधिक समय तक किया। वह शिक्षा विभाग के वरिष्ठ अधिकारी के रूप में भी मध्यप्रदेश में कार्यरत रहे। वह हिन्दी हाईस्कूल तथा विड़ला ट्रेनिंग कॉलेज के प्रिन्सिपल पद पर भी वर्षों रहे। उसी अवधि में उत्तर प्रदेश में श्री दीनानाथ जी शिक्षा विभाग के वरिष्ठ अफसरों में थे जो डिप्टी डाइरेक्टर रीजन के अतिरिक्त अन्य पदों पर भी कार्यरत रहे। श्री बुद्सेन चतुर्वेदी मथुरा के किशोरी रमण कॉलेज में समाजशास्त्रा के अध्यक्ष थे।

रुड़की विश्वविद्यालय में साठ के दशक में प्रो0 रामस्वरूप (सिविल इंजीनियरिंग विभाग) तथा उजागर लाल जी (वाटर रिसोरसेज विभाग) के अध्यक्ष रह कर मशहूर प्रोफेसरों में गिने जाते थे। श्री महेन्द्र नाथ जी ने उसी विश्वविद्यालय में स्पोर्ट अफसर के रूप में नाम कमाया।

चालीस से सत्तर के दशक तक लखनऊ में चार अध्यापक विभिन्न विषयों तथा संस्थाओं में बहुत लोकप्रिय तथा सम्मानित थे। ये थे श्री अमरनाथ मिश्र तथा इच्छा रामजी (नरही), डॉ0 अभय कुमार (रिवर बैंक कालोनी) एवं प्रताप नारायण चौबे (नया हैदराबाद)। श्री अमरनाथ जी कान्यकुब्ज कालेज में हिन्दी पाठन के लिए सम्मानित थे तो प्रतापनारायण जी काल्विन कालेज में अंग्रेज़ी की पढ़ाई के लिए अपने छात्राों में बहुत लोकप्रिय थे तथा आज तक याद किए जाते हैं। इच्छा राम जी के छात्रा उनसे रसायन शास्त्रा की पढ़ाई के लिए कान्यकुब्ज कालेज या फिर मेडिकल पढ़ाई में दाखिले के लिए उनके कोचिंग क्लास में प्रवेश पाने के लिए उत्सुक रहते थे। डॉ0 अभय लखनऊ के के0जी0एम0सी0 कालेज में पैथोलोजी डिपार्टमेन्ट के वरिष्ठ प्रोफेसरों में गिने जाते थे। एक संजीदा प्रोफेसर के रूप में वह अपने विषय के प्रति समर्पित अध्यापक थे।

उत्तर प्रदेश के सिंचाई विभाग के सीनियर इंजीनियर डॉ0 महेशचन्द्र जी ने आई0आई0टी दिल्ली तथा अमरीका के कई प्रीमियर इंजीनियरिंग कॉलेजों में तीस वर्ष से अधिक कार्य किया। वह हारवर्ड विश्वविद्यालय में अब भी विजीटिंग प्रोफेसर हैं। उनके विषय सिविल इंजीनियरिंग, ईरीगेशन, बाढ़ नियंत्राण एवं वाटर सप्लाई हैं। उनकी पत्नी डॉ0 विपला जी (पुत्राी डिप्टी राधेलाल जी) ने कुरुक्षेत्रा तथा अमरीकी कालेजों में रिसर्च तथा अध्यापन कार्य में प्रतिष्ठा अर्जित की। उनके विषय दर्शन एवं

शिक्षा शास्त्रा थे। अमरीका की आयोवा यूनीवर्सिटी से उन्होंने डाक्टरेट प्राप्त की। कई वर्षों तक वह फोर्ड फाउंडेशन की सलाहकार भी रहीं।

कुवंर सर जगदीश प्रसाद जी की दूसरी पुत्राी श्रीमती उमा इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्रोफेसर थीं। भारत के प्राचीन इतिहास की उनको मज़बूत पकड़ थी। उन्होंने मलऐशिया विश्वविद्यालय से डाक्टरेट हासिल की थी।

रेलवे बोर्ड के चेयरमेन तथा हिन्दुस्तान मोटर के जनरल मैनेजर सर लक्ष्मीपत मिश्र की पुत्राी डॉ0 पध्मा मिश्रा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग की अध्यक्षा थीं। हिन्दू धर्म तथा दर्शन उनके प्रिय विषय थे। भारतीय रेलवे के इंजीनियर श्री रविन्द्र नाथ जी की पत्नी राजकुमारी जी रेलवे के विभिन्न स्कूलों में अध्यापन कार्य में नियत रहीं तथा प्रिन्सिपल के रूप में ख्याति प्राप्त थीं। उनके बड़े पुत्रा डॉ0 अनिल तथा पुत्रावधू डॉ0 आभा भी पूना, हैदराबाद, लखनऊ के इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेन्ट के वरिष्ठ प्रोफेसरों में गिने जाते रहे हैं तथा विदेश में भी कार्यरत रहे। उनकी लिखित पुस्तकें तथा पेपर शोधपूर्ण रचनाओं में गिने जाते हैं।

श्री अविनाश चन्द्र जी (पुत्रा निर्मल चन्द्र जी के) रूड़की के थामसन इंजीनियरिंग कालेज के 1945 के स्नातक थे। वह उत्तर प्रदेश सरकार के सिंचाई विभाग में चीफ इंजीनियर के पद से रिटायर हुए। शिक्षा के क्षेत्रा में उनका योगदान बेमिसाल है। इंजीनियरिंग की विभिन्न विधाओं तथा विशेषकर सिविल इंजीनियरिंग, बाढ़ नियंत्राण, आर्बीट्रेशन तथा वेल्यूएशन के विषयों में प्रायोगिक ट्रेनिंग पर उन्होंने विशेष ध्यान दिया। देश विदेश की पत्रिाकाओं तथा सेमिनारों में हजारों लेख प्रकाशनार्थ भेजकर तथा प्रेजेन्टेशन के द्वारा उन्होंने अभियंत्राण के प्रेक्टिकल पहलू की जानकारी फैलाने में जोर दिया। इस माध्यम को अपनाते हुए वह अपने लेख, टिप्पणी, सम्पादकीय, सम्पादक के नाम पत्रा, समीक्षा तथा अन्य साहित्य विधाओं से अपने सहयोग के लिए सदैव तत्पर रहते थे। शिक्षण से उन्होंने कभी एक पैसा भी नहीं कमाया लेकिन इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर तथा इंस्टीट्यूशन ऑफ वेल्यूअर की पत्रिाकाओं में अनगिनत लेख तथा केस स्टडी छपने के लिए भेज कर पाठकों में जागरूकता पैदा की। रूड़की विश्वविद्यालय के भूतपूर्व छात्रा होने के नाते उसकी गतिविधियों तथा विकास में वह बहुत दिलचस्पी लेते थे। उस यूनिवर्सिटी के अतिरिक्त लखनऊ, गोरखपुर तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालयों एवं वहां के इंजीनियरिंग कॉलेजों के संचालन तथा विकास में वह बहुत उत्साह तथा सक्रिय रूप से योगदान देते थे। शारदा नहर, वनबसा का रामगंगा प्रोजेक्ट, गढ़वाल क्षेत्रा में पहाड़ों पर सिंचाई तथा धामपुर में बांध व एक्वीडेवट के निर्माण के प्रायोगिक उपलब्धि पर वह सराहे गए। इन कार्यों पर उनके लेक्चर लाभकारी केस स्टडी साबित हुए।

लखनऊ के निर्मलचन्द्र जी के तीसरे पुत्रा डॉ0 शरद चन्द्र ने राजनीति शास्त्रा में तीन दशक से अधिक प्रशिक्षण दिया। विषय के प्रति वह पूर्ण रूप से समर्पित थे। वह अपने परिश्रम तथा कठिन मसलों की भी सुगमता से पढ़ाई के कौशल के लिए विद्यार्थियों के सम्मान पात्रा थे। समाज शास्त्रा व सोशल वर्क में पोस्ट ग्रेजुएट तथा कानून के स्नातक होने के कारण वह राजनीति शास्त्रा के विस्तृत पहलुओं को

समझाने में माहिर थे। ईमानदारी तथा निष्पक्षता के लिए वह विशेष रूप से मशहूर थे। परीक्षा काल में नकल रोकने के लिए जानलेवा हमलों की परवाह न करते हुए उन्होंने अपनी ड्यूटी से कभी समझौता नहीं किया।

निर्मल चन्द्र जी के चौथे पुत्रा डॉ0 उमेश चन्द्र (दंतचिकित्सक) ने लखनऊ के वधिर विश्वविद्यालय की बागडोर छत्तीस वर्ष तक दक्षता से संभाली। विश्वविद्यालय तथा प्रशिक्षण कालेज के व्यवस्थापक के रूप में अध्यापकों, कर्मचारियों तथा छात्राों की जरूरतों को संभालने के कठिन कार्य में वह खरे उतरे। केन्द्र तथा राज्य सरकारों के सामने विकलांग शिक्षा की चुनौतियों को उजागर कर सकने में भी कामयाब रहे। लखनऊ/ कछपुरा के गिरीश चन्द्र जी की धर्मपत्नी उर्मिला जी का कलकत्ता के अशोक हाल नामक स्कूल में वरिष्ठ अध्यापिकाओं में प्रमुख स्थान था। अशोक हाल में उनकी गणना प्रमुख अध्यापिकाओं में की जाती थी। अनुशासनप्रियता तथा छात्राों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार उनकी विशेषता थी।

लखनऊ विश्वविद्यालय में एक साथ दो भाई अध्यापन कार्य के लिए विख्यात थे। अंग्रेज़ी विभाग में डॉ0 भोलानाथ तथा हिन्दी में उनके छोटे भाई डॉ0 शम्भूनाथ। भोलानाथ जी अपने विषय के विभागाध्यक्ष, डीन एवं प्रो वाइस चांसलर भी नियत किए गए। उनके भाई शम्भूनाथ जी की साहित्य सृजन में भी खास अभिरुचि थी।

इलाहाबाद हाईकोर्ट के जज हरिशंकर जी के ज्येष्ठ पुत्रा डॉ0 रविशंकर लखनऊ विश्वविद्यालय से भूगर्भ शास्त्रा (अर्थ साइन्स विभाग) में एम0एस0सी0 करने के बाद रुड़की विश्वविद्यालय में 1960 से 1980 तक कार्यरत रहे। अपनी गहन जानकारी तथा कर्तव्य निष्ठा के लिए वह सम्मान पात्रा थे। रुड़की के छात्राों में अनुशासन कायम करने के लिए वह प्राक्टर तथा डीन के पदों पर नियत किए गए। उन्हें यूनिवर्सिटी ऑफ वेस्टर्न आस्ट्रेलिया, पर्थ में काम करने का मौका मिला। उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्राी श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने उन्हें प्रदेश में रिमोट सेन्सिंग विभाग के गठन के लिए चुनते हुए उसका प्रथम निदेशक नियत किया।

लखनऊ के कमलाकांत जी के परिवार के श्री उमाकांत जी गणित के लोकप्रिय अध्यापक थे। मुक्ता प्रसाद जी ने उनकी योग्यता के आधार पर सिविल इंजीनियरिंग स्कूल, आलम बाग लखनऊ में उन्हें नियत किया। अपने विषय के वह लोकप्रिय टीचर थे। बाद में उत्तर प्रदेश सैनिक स्कूल लखनऊ में उन्होंने अपने केडेटों के बीच गणित जैसे जटिल विषय में रुचि जाग्रत कर सकने में सफलता प्राप्त की। उसी परिवार के श्री अभयकांत जी दिल्ली के मार्डन स्कूल (बाराखम्बा रोड) के प्रमुख अध्यापक तथा क्रिकेट कोच भी रहे। अभय जी की पत्नी नीरजा जी भी अध्यापिका तथा प्रिंसिपल दोनों ही रूप में कामयाब रहीं।

श्री लीलाधर जी ने 1951 से 1987 के बीच उच्च शिक्षा में प्राणिशास्त्रा या जीव विज्ञान (जूलाजी) के विषय में काबिले तारीफ कार्य किया। मुरादाबाद के हिन्दू कालेज में बी0एस0सी0 का पाठ्यक्रम प्रारंभ करने में पहल का श्रेय उनको दिया जाता है। उनकी कर्तव्यनिष्ठा एवं शिक्षा कौशल के कारण उनके कालेज में एम0एस0सी0 तथा डाक्टरेट के स्तर तक विभाग का विस्तार हुआ। उन्होंने देश में कई

सेमिनारों में भाग लिया तथा संचालन भी किया। हेम्वर्ग (जर्मनी में) उन्हें एक अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार के लिए 1982 में भेजा जाना उनकी उपलब्धियों एवं योगदान की समुचित सराहना थी।

हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार रूप नारायण जी के छोटे भाई आदित्य जी ने बलरामपुर के रानी लाल कुवंर डिग्री कालेज के प्रद्यानाचार्य के ओहदे पर वर्षों बखूबी काम किया। डॉ0 योगेन्द्र जी गोरखपुर यूनिवर्सिटी में फिजिक्स के लोकप्रिय प्रोफेसर थे। डॉ0 शैलेन्द्र नाथ (सुपुत्रा प्रसिद्ध साहित्यकार एवं सम्पादक श्री नारायण जी) गोरखपुर विश्वविद्यालय में इतिहास विभाग के अध्यक्ष थे। प्राचीन भारतीय इतिहास उनका खास विषय था। उनके गहन अध्ययन तथा विषय को सरलता से समझा सकने में माहिर होने के कारण वह बहुत लोकप्रिय हैं।

काशी भवन जयपुर से निकले श्री मुनीश्वर नाथ मिश्र ने भारतीय तथा जर्मन तकनीकी प्रशिक्षण के आधार पर लखनऊ एवं जयपुर में मैकेनिकल इंजीनियरिंग, जर्मन भाषा तथा मेटीरियल मैनेजमेंट में पढ़ाने में नाम कमाया।

किंग जार्ज मेडिकल कालेज लखनऊ के पेथोलॉजी विभाग में डॉ0 उमेशचन्द्र ने अपनी विलक्षण प्रतिभा तथा कुशाग्र बुद्धि से नए कीर्तिमान स्थापित किए। देश विदेश की पेशेवर पत्रिकाओं में उनके रिसर्च पेपर छपना सामान्य बात थी।

जयपुर के काशी भवन के सदस्य तथा उरई के निवासी ग्रुप केप्टन सिद्धनाथ मिश्रा ने भारतीय वायुसेना की एजुकेशन ब्रांच में कार्यरत रहते हुए अपने छात्राों के प्रशिक्षण में बहुत नाम प्रसिद्धि पाई।

जयपुर के कर्नल शम्भू नाथ सेना की एजूकेशन कोर के अनुभवी तथा लोकप्रिय टीचरों में सम्मानपात्रा रहे।

काशी भवन (जयपुर) के श्री हरिहर नाथ मिश्र की पुत्राी डॉ0 नीरजा अंग्रेज़ी विभाग के प्रतिष्ठित प्राचार्यों में एक थीं। उन्हें अमरीका की नामी फुलब्राइट स्कालरशिप प्रदान की गई। आधुनिक अमरीकन ड्रामा के विषय पर उनका अनूठा योगदान है। अपने कालेज में अंग्रेज़ी विभाग की स्थापना तथा उसके विस्तार के लिए उनका योगदान सर्वविदित है। उन्होंने अमरीका, यूरोप तथा एशिया के कई देशों में आयोजित सेमिनारों में शिक्षा संबंधित विषयों पर शोधपूर्ण लेख प्रस्तुत किए।

महासभा के सभापति कालिका प्रसाद जी (सिकंदरपुर) की पुत्राी तथा ट्रिव्यून के पत्राकार धीरेन्द्र नाथ जी की पत्नी मीरा चतुर्वेदी की लगभग चालीस वर्ष से अधिक की केन्द्रीय विद्यालय की सेवा तारीफ का विषय है। हिन्दी साहित्य में उनकी गहरी पैंठ है। स्वयं कवियत्राी होने की विशेषता, व्यंग्य की दक्षता तथा वाद–विवाद एवं एकांकी नाटक में शौक के कारण वह चन्डीगढ़, जम्मू, जालंधर तथा मुराद नगर में कार्यरत रहते हुए छात्राों में बहुत लोकप्रिय थीं। रिटायर होने के बाद भी उनकी स्वयंसेवी संस्था दलित तथा पिछड़े वर्ग के छात्राों को निःशुल्क पढ़ाई के लिए सराही जाती हैं। उन्होंने अपने पास पड़ोस के नागरिकों में भी शिक्षा प्रसार में लगन जाग्रत करने में कामयाबी पाई।

डॉ0 विष्णु स्वरूप पांडे (सुपुत्रा जगदीश जी मैनपुरी) ने अंग्रेज़ी के लोकप्रिय तथा अनुभवी प्रोफेसर के रूप में कानपुर में अपनी प्रतिष्ठा स्थापित की।

आगरा में सेन्ट जान्स कालेज में डॉ0 हरीश चतुर्वेदी (फिरोजाबाद) गणित विषय के अनुभवी प्रोफेसरों में गिने जाते हैं। उनके छात्रा उनका बहुत सम्मान करते हैं। कालेज की पढ़ाई के अतिरिक्त इंजीनियरिंग तथा सिविल सर्विस प्रवेश परीक्षा में कामयाबी के लिए छात्रा उनके पास पढ़ाई के लिए बड़ी संख्या में अब तक आते हैं। डॉ0 विभा चतुर्वेदी (पत्नी श्री वी0 के0 चतुर्वेदी) ने दिल्ली यूनिवर्सिटी तथा अन्य कई विश्वविद्यालय में अपने शोधपूर्ण कार्य तथा अनूठे प्रभावकारी कार्य की छाप छोड़ी है।

डॉ0 कृष्णा जी ने दिल्ली विश्वविद्यालय में कई दशक सराहनीय कार्य किया। डॉ0 प्रवीण चतुर्वेदी कुरुक्षेत्रा विश्वविद्यालय के भूभर्ग शास्त्रा विभाग के अध्यक्ष तथा हिन्दी के जाने–माने लेखक हैं। वह अपने पूरे कार्यकाल में अपने विषय के विशेषज्ञों में सम्मानित किए गए हैं। मुरादाबाद के श्री पृथ्वीनाथ जी के पुत्रा किशन जी ने अफ्रीका में कामयाबी के साथ टीचिंग कार्य किया है।

लखनऊ विश्वविद्यालय से इतिहास में एम0ए0 करने के बाद इला चतुर्वेदी (पत्नी श्री अशोक जी विवेकानन्द रोड, कोलकाता) कलकत्ता में तीन दशक से अध्यापन कार्य कर रही हैं। नोपानी विद्यालय की वह वरिष्ठतम टीचर हैं। कोलकाता से बाहर कई स्थानों पर अपने छात्राों की विजिट आयोजित करके उन्होंने अपने विषय में पर्याप्त रुचि जाग्रत करने में कामयाबी हासिल की है। उनकी समकालीन इन्द्रा (पत्नी श्री अविनाश चन्द्र जी एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर एम0एम0 टी0सी0) अंग्रेज़ी विषय तथा अंग्रेज़ी कम्यूनिकेशन के प्रशिक्षण में सम्मानित हैं। उन्हें देश के विभिन्न नगरों में शोर्ट कोर्स में व्यवहारिक ट्रेनिंग देने के लिए न्योता दिया जाता है। अर्चना मिश्र (पत्नी श्री प्रदीप कोटा नरेश) लखनऊ विश्वविद्यालय से स्नाकोत्तर अध्ययन के बाद कोटा में कार्यरत हैं। लीना (श्रीमती राजीव) का शिक्षा से विशेष लगाव था तथा देहरादून में सफलता से टीचिंग कार्य किया। डॉ0 मधू चतुर्वेदी (पत्नी कर्नल गोपाल कृष्ण) ने भी वेलम तथा देहरादून के कई स्कूलों में तथा इन्डोनेशिया में विभिन्न क्लासों में कामयाबी से पढ़ाने का तजुरवा हासिल किया। वह पत्राकारिता क्षेत्रा से भी जुड़ी हैं।

सुनीता चतुर्वेदी (पत्नी एयर कोमोडोर अशोक कुमार) ने बीदर, दिल्ली, उधमपुरा तथा चेनाई आदि स्थानों पर लगभग दो दशक अध्यापन कार्य कुशलता से किया। प्रसिद्ध पत्राकार सुरेन्द्र चतुर्वेदी की पुत्राी अंजना (पत्नी मेजर जनरल इन्द्र शेखर चतुर्वेदी) ने लखनऊ, झांसी, देवलाली तथा अन्य छावनियों के प्रमुख स्कूलों में पढ़ाने के कार्य में शोहरत हासिल की है। विशेष रूप से लखनऊ के सेन्ट एग्नेस स्कूल के छात्रा उनके प्रशंसक हैं। उनकी छोटी बहन जया भी इस समय देहरादून के प्रमुख स्कूलों में लोकप्रिय तथा अनुशासन प्रिय अध्यापिकाओं में हैं। डॉ0 सुरेखा (पत्नी श्री विचित्रा वीर, लखनऊ) ने रायवरेली तथा समीपवर्ती क्षेत्राों में वर्षों कई विद्यालयों में बखूबी पढ़ाया है।

श्रीमती कल्पना (पत्नी श्री कुलदीप) ने बम्बई के जी0डी0 सोमानी तथा अन्य स्कूलों में पढ़ाने का कार्य सफलता से संपन्न किया। श्री संजय (सुपुत्रा श्री अविनाश चन्द्र जी, पार्क रोड) मैनेजमेन्ट के विषय में एमिटी यूनीवर्सिटी नोइडा में सीनियर प्रोफेसर हैं।

अमिता (पत्नी इंजीनियर राजीव जी) ने देश के विभिन्न स्थानों पर टीचिंग का कार्य किया है। विशेष रूप से लखनऊ के सिटी मोन्टेसरी स्कूल तथा बंगलौर के क्राइस्ट चर्च स्कूल में उनके अंग्रेज़ी के

प्रशिक्षण का विशेष उल्लेख किया जाता है। इसी प्रकार आभा (पत्नी श्री शैलेन्द्र, पार्क रोड, लखनऊ), मनीशा (पत्नी श्री पंकज, फरीदाबाद), पूनम (पत्नी श्री विवेक पाठक, नोइडा) एवं शालिनी (पत्नी श्री सौरभ, लखनऊ) का अध्यापन के क्षेत्रा में विशेष योगदान है।

मीनाक्षी (सांताक्रुझ, मुम्बई) भी अनुभवी अध्यापिका हैं।

नमिता चतुर्वेदी (पत्नी इन्दौर निवासी डॉ0 सचिन) ने दिल्ली तथा अमरीका में कई स्कूलों में लोकप्रिय अध्यापिका के रूप में नाम कमाया है। इरा जी (पत्नी पत्राकार अनन्त मिश्र) लखनऊ के लामार्टीनियर कॉलेज में कार्यरत हैं तथा उनकी छोटी बहन शिखा ने दो विषयों में स्नाकोत्तर पढ़ाई के बाद लखनऊ के कई स्कूलों में पढ़ाने का कार्य जारी रखा है। डॉ0 प्रचेतना चतुर्वेदी (पत्नी श्री आनन्द लोकनिवास) भी पढ़ाई के कार्य से अनवरत जुड़ी हुई हैं।

श्रीमती मीरा जी की पुत्रा्री नूतन (पत्नी श्री हर्ष, नोइडा निवासी) ने लगभग दो दशकों से फरीदाबाद तथा नोइडा के टाप स्कूलों में पढ़ाने का कार्य कामयाबी से चालू रखा है।

सशस्त्रा सेना में केरियर

मेजर जनरल नीलेन्द्र कुमार

भारत की सशस्त्रा सेना फौज में प्रवेश के लिए स्वेच्छित उम्मीदवार प्रत्याशियों का स्वागत करती है। जाति, वर्ग, धर्म तथा सम्प्रदाय को नजरअन्दाज करते हुए प्रत्येक भारतीय नागरिक निर्धारित शर्तों को पूरा करके सेना में कमीशन अथवा जूनियर कमीशन या सैनिक पद पर नियुक्ति के लिए आवेदन कर सकता है।

भारतीय सेनाओं में अफसर बनने के दो मुख्य तरीके हैं। यह हैं परमानेंट कमीशन तथा शार्ट सर्विस कमीशन। परमानेंट कमीशन उन प्रत्याशियों के लिए है जो सेना में स्थायी रूप से केरियर के इच्छुक हैं। शार्ट सर्विस कमीशन केवल पांच वर्ष की अवधि के लिए होता है। उसके बाद आगे भी सेना में काम करने वाले अफसरों को उपयुक्त पाए जाने की स्थिति में, बने रहने के लिए चुना जा सकता है।

पूना के निकट खड्गवासला स्थित नेशनल डिफेन्स अकादमी में स्थल सेना, जलसेना तथा वायुसेना के लिए तीन वर्ष का प्रशिक्षण दिया जाता है। इसके लिए न्यूनतम शैक्षिक योग्यता दस एवं दो वर्ष की पढ़ाई निर्धारित है। इसमें प्रवेश के लिए केन्द्र सेवा आयोग द्वारा वर्ष में दो बार लिखित परीक्षा होती है जिसके केन्द्र प्रत्येक राज्य की राजधानी तथा बड़े नगरों में हैं। परीक्षा में कामयाब केन्डीडेट को सर्विस सलेक्शन बोर्ड (एस एस बी) में फिजिकल टेस्ट तथा इन्टरव्यू के लिए बुलाया जाता है। उसके

बाद मेडिकल जांच के बाद सफल प्रत्याशियों की सूची जारी होती है। ट्रेनिंग का सत्रा प्रति वर्ष जनवरी तथा जुलाई में शुरु होता है।

प्रवेश परीक्षा में दो प्रश्नपत्रा होते हैं। गणित के पर्चे के अधिकतम अंक तीन सौ तथा सामान्य एविलिटी के प्रश्नपत्रा के छह सौ नंबर होते हैं। यह दोनों प्रश्नपत्रा ढाई घंटे की अवधि के होते हैं। सामान्य एविलिटी के प्रश्नपत्रा में अंग्रेज़ी तथा सामान्य ज्ञान (फिज़िक्स, केमिस्ट्री, जनरल साइंस, इतिहास तथा स्वतंत्राता आंदोलन, भूगोल तथा करेन्ट ईविन्स) पर सवाल होते हैं। दोनों प्रश्नपत्रा अंग्रेज़ी भाषा में सेट किए जाते हैं।

एन डी ए की ट्रेनिंग पूरी होने पर प्रार्थी केडेट आगे प्रशिक्षण के लिए देहरादून की इंडियन मिलिट्री ट्रेनिंग में एक साल के लिए भेजे जाते हैं। जलसेना प्रशिक्षण गोवा की नेवल अकादमी तथा वायुसेना की ट्रेनिंग हैदराबाद में दी जाती है।

ग्रेजुएट प्रत्याशियों को केन्द्र सेवा आयोग के कम्बाइन्ड डिफेन्स सर्विस एक्जामिनेशन (सी0डी0एस0ई0) में शामिल होने का अवसर मिलता है। इस धारा के अन्तर्गत लिखित परीक्षा के बाद एस0एस0बी0 तथा फिर मेडिकल टेस्ट के लिए जाना पड़ता है। कामयाब प्रत्याशियों को इंडियन मिलिट्री अकादमी में दो वर्ष की ट्रेनिंग दी जाती है। फिर इन्हें सेना में लेफ्टिनेंट के ओहदे पर नियुक्त किया जाता है।

उन्नीस से चौबीस वर्ष के नवयुवक इसमें आवेदन दे सकते हैं।

थल सेना की इंजीनियरिंग कोर में प्रवेश के लिए इच्छुक बीस से सत्ताईस वर्ष के नवयुवक सीधे एम0ए0 में दाखिले के लिए एप्लाई कर सकते हैं। उन्हें केवल एस0एस0बी0 का सामना करना पड़ता है।

एक अन्य तरीका यूनिवर्सिटी एन्ट्री स्कीम कहलाता है। 18 से पच्चीस वर्ष के नवयुवक जो इंजीनियरिंग डिग्री के अंतिम या प्री फाइनल वर्ष में पढ़ रहे हैं, इस स्कीम का फायदा उठा सकते हैं। कैम्पस तथा एस0एस0बी0 में साक्षात्कार के द्वारा उनका चुनाव होता है। आई0एम0ए0 में प्रशिक्षण के बाद उन्हें फौज की तकनीकी जांच या सर्विस में कमीशन दिया जाता है।

एक अन्य तरीका भारतीय सेना की दस प्लस दो की पी0सी0एम0 (टेक्निकल) स्कीम है। इस योजना में दस प्लस दो के फिज़िक्स, केमिस्ट्री तथा मेथमेटिक्स के विद्यार्थी सीधे आई0एम0ए0 में दाखिले के लिए आवेदन कर सकते हैं।

नेशनल केडेट क्रेडर की स्पेशल एन्ट्री स्कीम के अन्तर्गत 19 से 25 वर्ष के नवयुवक जिन्होंने स्नातक डिग्री कम से कम पचास प्रतिशत अंक से हासिल की है, फौज में दाखिले के लिए फार्म भर सकते हैं। इसके लिए उनका एन0सी0सी0 सार्टिफिकेट में कम से कम बी0 सार्टिफिकेट प्राप्त करना आवश्यक है। उन्हें सी0डी0एस0ई0 की परीक्षा से छूट दी जाती है। उन्हें सीधे इलाहाबाद, भोपाल या बंगलौर स्थित एस0एस0बी0 का सामना करना पड़ता है।

महिलाओं के लिए वीमेन्स स्पेशल एन्ट्री स्कीम (डब्लू एस0ई0एस0) योजना है। इसमें अविवाहित लड़कियों या संतानहीन (पेनम समे) महिलाओं को जो 19 से 27 वर्ष की आयु के बीच में हैं, उन्हें प्रशिक्षण के लिए चुना जाता है। शैक्षिक योग्यता, बी0ए0, बी0कॉम0, बी0सी0ए0 अथवा फिजिक्स, केमिस्ट्री, मेथ्स के साथ न्यूनतम 60 प्रतिशत अंकों में ग्रेजुएशन है। पचास प्रतिशत अंक वाले एन0सी0सी0 केडेट जिन्होंने बी अथवा सी सार्टिफिकेट पास कर लिया है, भी एप्लाई के लिए योग्य हैं।

डब्लू एस0ई0एस0 योजना के अन्दर फौज की नॉन टेक्निकल आर्म तथा सर्विसेज में कमीशन लिया जाता है। फिलहाल फौज के कानूनी विभाग जज एडवोकेट जनरल तथा आर्मी एजुकेशन कोर में महिलाओं को परमानेन्ट कमीशन दिए जाने को भी अनुमति दे दी गई है। शार्ट सर्विस की अवधि के दौरान उन्हें ई0एम0ई0, सिगनल, इंजीनियर्स, आर्डनेन्स, आर्मी सर्विस कोर तथा ईन्टेलीजेन्स कोर में भरती किया जाता है। जल सेना की प्रत्येक शाखा में उन्हें दाखिला मिल सकता है। वायुसेना की फ्लाईंग, एरोनोटिकल (इलेक्ट्रिक्स) मेकेनिकल, एजूकेशन, एडमिनिस्ट्रेशन, लोजिस्टिक्स, अकाउंट तथा मेटरोलोजी ब्रांच महिलाओं के लिए खुली है।

मेडिकल कोर में पूना स्थित, आर्म्ड फोरसेन मेडिकल कॉलेज के स्नातकों को परमानेन्ट कमीशन के लिए चुना जा सकता है। इसके अतिरिक्त स्नातक एवं पोस्ट ग्रेजुएट मेडिकल योग्यता प्राप्त पुरुष तथा महिला प्रत्याशी भी परमानेन्ट या शार्ट सर्विस कमीशन के लिए आवेदन कर सकते हैं।

रक्षा मंत्राालय के द्वारा उपरोक्त योजनाओं के अन्तर्गत फौज में कमीशन के लिए वेवसाइट पर विस्तार से जानकारी हासिल की जा सकती है। इसके अतिरिक्त समय–समय पर समाचार पत्रों तथा पत्रिकाओं के माध्यम से भी सूचना जारी की जाती है।